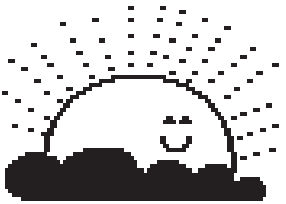

विघ्न विनाशक बनो

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत

दो शब्द

डायमण्ड जुबली वर्ष में सभी राजयोगी भाई-बहनों ने साइलेंस की योग भट्ठियों द्वारा स्वयं की स्थिति को निर्विघ्न वा शक्तिशाली बनाकर बापदादा की शिक्षाओं को साकार रूप दिया ही है। लेकिन सम्पन्नता की ऊंची मंजिल पर पहुँचने के लिए समय प्रति समय हर एक के सामने जो अनेक रूकावटें (विघ्न) साइड सीन के रूप में आती हैं, उन सबको पार करने के लिए निरन्तर अभ्यास द्वारा शक्तिशाली स्थिति बनाने की आवश्यकता है। तमोगुणी व्यक्ति, प्रकृति और माया द्वारा आने वाली परीक्षाओं को सहज रीति से पार करने के लिए प्यारे अव्यक्त बापदादा ने अपने महावाक्यों में बहुत सी युक्तियां सुनाई हैं।

इस पुस्तिका में अनेक प्रकार के विघ्नों के कारण तथा उनके निवारण लिखे जा रहे हैं, जो अव्यक्त मुरलियों से ही चुने गये हैं। यदि इन सबका नित्य एकाग्रता से अध्ययन कर लिया जाए तो यह महावाक्य एक अचूक औषधी का काम करेंगे और आत्मा स्वयं को सर्व शक्तियों से सम्पन्न अनुभव करते हुए हर विघ्न को हँसते-हँसते पार कर लेगी।

आशा है यह पुस्तक हर एक पुरूषार्थी के लिए इस नये वर्ष में अवश्य ही अलौकिक उपहार के रूप में सिद्ध होगी।

विघ्न–विनाशक बनो

विघ्न आने के कारण और निवारण

1) यज्ञ में सबसे बड़ा विघ्न है बच्चों का ''मैं पन'' और ''मेरा मन।'' मैंने यह किया, मैं ही यह कर सकता हूँ... यह मैं पन आना – इसको ही कहा जाता है ज्ञान का अभिमान, बुद्धि का अभिमान, सर्विस का अभिमान और दूसरा मेरा पन अर्थात् मेरा शरीर, मेरा सम्बन्ध–यह मेरापन भी बहुत विघ्न डालता है।

2) अपने पुराने स्वभाव और संस्कार, जो कभी-कभी नये जीवन में इमर्ज हो जाते हैं। अपना कमजोर संस्कार दूसरे के संस्कार से टक्कर खाता है। यह कमजोरी विशेष लक्ष्य तक पहुँचने में विघ्न डालती है। फुल पास के

बजाए पास मार्क दिला देती है।

3) सर्विस में कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टेन्शन आने का कारण है – स्वयं और सेवा का बैलेन्स नहीं, स्वयं का अटेन्शन कम हो जाने के कारण सर्विस में कोई न कोई प्रकार का विघ्न वा टेन्शन पैदा हो जाता है। मर्यादा की लकीर से बाहर निकलकर सेवा करते हो, धारणाओं पर पूरा अटेन्शन नहीं है तो बहुत विघ्न पड़ते हैं।

4) आपस में जो व्यर्थ समाचारों की लेन-देन चलती है, यह आदत जो बढ़ती जा रही है–यही तपस्या में बहुत बड़ा विघ्न है। हर एक समझे कि इस हॉबी को स्वयं में समाप्त करने की मैं जिम्मेवारी लूँ, तब विघ्न-विनाशक कहे जायेंगे।

5) यदि कोई भी बात में किसी भी प्रकार की जरा भी फीलिंग आती है–यह क्यों, यह

क्या..... तो फीलिंग आना माना विघ्न रूप बनना। सदैव यह सोचो कि व्यर्थ फीलिंग से परे, फीलिंग-प्रूफ आत्मा हूँ। तो मायाजीत, विघ्नजीत बन जायेंगे।

6) 63 जन्मों के विस्मृति के संस्कार वा कमजोरी के संस्कार ब्राह्मण जीवन में कहाँ-कहाँ मूल नेचर बन पुरुषार्थ में विघ्न डालते हैं, इसलिए स्मृति स्वरूप बनो।

7) छोटे-छोटे सूक्ष्म पाप श्रेष्ठ सम्पूर्ण स्थिति में विघ्न रूप बनते हैं। इसलिए अपनी सूक्ष्म चेकिंग कर उन पापों से मुक्त बनो। ऐसे नहीं सोचो कि यह तो सभी करते हैं, यह तो आजकल चलता ही है। मैंने तो यह बात हंसी में कही, मेरा तो कोई भाव नहीं था, ऐसे ही बोल दिया....यह भी सम्पूर्ण सिद्धि को प्राप्त होने में सूक्ष्म विघ्न है। इसे चेक करो और चेंज करो।

8) किसी भी विघ्न को चेक करो तो उसका मूल कारण प्रीत के बजाए विपरीत भावनायें ही होती हैं। भावना पहले संकल्प रूप में होती है, फिर बोल में आती है और उसके बाद फिर कर्म में आती है। जैसी भावना होगी, वैसा व्यक्तियों के हर एक चलन वा बोल को उसी भाव से देखेंगे, सुनेंगे वा सम्बन्ध में आयेंगे। भावना से भाव भी बदलता है। अगर किसी आत्मा के प्रति किसी भी समय ईर्ष्या की भावना है अर्थात् अपनेपन की भावना नहीं है तो उस व्यक्ति के हर चलन, हर बोल से मिस-अन्डरस्टैण्ड का भाव अनुभव होगा और वही विघ्नों का कारण बन जायेगा। इसलिए अपनी श्रेष्ठ भावनाओं से विघ्न-विनाशक बनो।

9) सर्विस में विघ्न डालने वाली तीन बातें हैं:- 1- बहाना देना। 2- कहलाना और 3- सर्विस करते मुरझा जाना।

10) जब आपकी कथनी और करनी एक नहीं रहती। कहने और करने में अन्तर हो जाता है तब विघ्न पड़ते हैं। यदि कहते हो कि यह विकार बुरी चीज़ हैं, औरों को भी सुनाते हो लेकिन खुद घर गृहस्थी से न्यारे होकर नहीं चलते हो तो विघ्न पड़ते हैं इसलिए जो कहते हो वही करो।

11) जो व्यर्थ संकल्प और विकल्प चलते हैं, वे अव्यक्त स्थिति में स्थित होने में विघ्न हैं। इसी कारण बार-बार शरीर की आकर्षण में आ जाते हो, इसका भी मूल कारण है कि बुद्धि की सफाई नहीं है। बुद्धि की सफाई अर्थात् बुद्धि को जो महामन्त्र मिला हुआ है उसमें बुद्धि मगन न होने के कारण अनेक विघ्न आते हैं।

12) जो अव्यक्त स्थिति के अनुभव से आये वह शुरू से ही निर्विघ्न चल रहे हैं। लेकिन

यदि अव्यक्त स्थिति का फाउन्डेशन मजबूत नहीं है, किसी दूसरे आधार पर चल रहे हैं तो उनके सामने अनेक विघ्न, मुश्किलातें आती हैं जिससे पुरूषार्थ कठिन लगता है।

13) पुरूषार्थ में अथवा सम्पूर्ण होने में विशेष व्यर्थ संकल्प ही विघ्न रूप बन रुकावट डालते हैं। इससे बचने के लिये, एक तो – कभी अन्दर की वा बाहर की रेस्ट न लो। अगर रेस्ट में नहीं होंगे तो वेस्ट नहीं जायेगा और दूसरी बात – अपने को सदैव गेस्ट समझो।

14) कम्पलीट बनने में व्यर्थ संकल्पों के तूफान विघ्न डालते हैं, इसका कारण है कि मन को हर समय बिजी नहीं रखते हो। इसके लिए समय की बुकिंग करने का तरीका सीखो। इस कम्पलेन को समाप्त करने के लिए रोज अमृतवेले सारे दिन के लिए अपॉइन्टमेंट की डायरी बनाओ।

15) घर में रहते यदि अपने शक्ति स्वरूप की स्मृति नहीं रहती है तो कर्म-बन्धन विघ्न डालते हैं। फिर यह आवाज़ निकलता है कि क्या करें? कर्म-बन्धन है। इस बंधन को कैसे काटें? लेकिन शक्ति स्वरूप की स्मृति विघ्नों को समाप्त कर देती है, विघ्नों में चिल्लाने वा घबराने के बजाए शक्ति रूप बन उनका सामना करो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

16) यदि अपनी कामनाओं को पूर्ण करने के लिए पुराने संस्कारों को अपने पास रख लेते हो तो वह संस्कार ही पुरूषार्थ में विघ्न रूप बनते हैं। कई बच्चे सोचते हैं कि सम्पूर्ण तो अन्त में बनना है। थोड़ा बहुत तो रहेगा ही। जेब खर्च माफिक जरा सा कोई संस्कार अन्दर रह गया तो वह थोड़ा संस्कार भी धोखा दिला देता है इसलिए पुरानी जायदाद को छिपाकर नहीं रखो।

17) प्रैक्टिकल दिनचर्या में बहुत करके एक शब्द विशेष विघ्न रूप बनता है – वह है रोब। और रोब आने के कारण रूहाब नहीं रहता है। रोब भी तब आता है जब स्वयं को सेवाधारी नहीं समझते हो। सेवाधारी समझो तो रोब नहीं आयेगा।

18) प्रवृत्ति में रहते कई बच्चे समझते हैं कि अगर थोड़ा रोब के संस्कार नहीं होंगे तो प्रवृत्ति कैसे चलेगी। लोभ के संस्कार नहीं होंगे तो कमाई कैसे कर सकेंगे वा अहंकार का रूप नहीं होगा तो लोगों के सामने पर्सनैलिटी कैसे देखने में आयेगी। ऐसे थोड़ा बहुत पुराने संस्कारों का खज़ाना छिपाकर रख लेते हैं फिर यही संस्कार विघ्न रूप बनते हैं।

19) वर्तमान प्रवृत्ति कर्मबन्धन चुक्तू करने के लिए है, यदि चुक्तू करने वाली प्रवृत्ति के तरफ ज्यादा अटेन्शन देते हो और अलौकिक

प्रवृत्ति तरफ कम अटेन्शन देते हो तो यह भी मोह-ममता का रॉयल रूप है। यह अंश वृद्धि को पाते-पाते विघ्न रूप बन विजयी बनने में हार खिला देता है।

20) विघ्नों की लहर तब आती है जब रुहानियत की तरफ फोर्स कम हो जाता है। मनन शक्ति द्वारा स्वयं में सर्व शक्तियां भरने वा मगन अवस्था में स्थित नहीं रहते हो, इसलिए विघ्न पड़ते हैं।

21) आलस्य का विघ्न भी पुरूषार्थ में आगे बढ़ने नहीं देता है। कई बार यह जो कह देते हो कि अच्छा सोचेंगे, यह कार्य करेंगे, कर ही लेंगे, यह आलस्य की निशानी है। इसलिए यही सोचो कि जो करना है, वह अभी करना है। भल कोई विघ्न नहीं है लेकिन यदि लगन भी श्रेष्ठ नहीं है, हुल्लास वा कोई विशेष उमंग नहीं है तो उसे भी आलस्य ही कहेंगे।

यह आलस्य धीरे-धीरे पहले साधारण पुरूषार्थी बनायेगा वा समीपता से दूर करेगा फिर दूर करते-करते धोखा भी दे देगा। कमजोर बना देगा, निर्बल बना देगा। फिर आने वाले विघ्नों का सामना नहीं कर सकेंगे, इसलिए आलस्य के रूपों को पहचान कर उसका त्याग करो।

22) जब तक लाइट और माइट से सम्पन्न नहीं बने हो तब तक विघ्न पड़ते हैं। यदि सिर्फ नॉलेज की लाइट है लेकिन माइट नहीं है तो आने वाले विघ्नों का सामना नहीं कर सकेंगे।

23) जैसे हस्तों की लाइन में अगर बीच-बीच में लकीर कट होती हैं तो श्रेष्ठ भाग्य नहीं गिना जाता है व बड़ी आयु नहीं मानी जाती है। वैसे यहाँ भी अगर बीच-बीच में विघ्नों के कारण बाप से जुटी हुई बुद्धि की लाइन कट होती रहती है व क्लियर नहीं रहती है तो बड़ी प्रारब्ध नहीं हो सकती।

24) हर आत्मा में भाई-भाई का भाव न रखने से, स्वभाव एक विघ्न बन जाता है।

25) यदि माया का कोई भी कर्ज रहा हुआ होगा तो वह कर्ज, मर्ज का रूप हो जायेगा और माया बार-बार परेशान करती रहेगी। इसलिए अपने खाते को चेक करो कि कोई पुराने संकल्प व संस्कार-स्वभाव के रूप में कर्ज रहा हुआ तो नहीं है? जैसे शारीरिक रोग व कर्ज बुद्धि को एकाग्रचित नहीं करने देता, न चाहते हुए भी अपनी तरफ बार-बार खींच लेता है, ऐसे ही यह मानसिक कर्ज का मर्ज बुद्धियोग को एकाग्र करने नहीं देगा। विघ्न रूप बन जायेगा।

26) जब आराम के साधनों का एडवान्टेज (लाभ) लेते हो तो सदाकाल की प्राप्ति में विघ्न पड़ता है। अगर अभी किसी भी प्रकार की सिद्धि अथवा प्राप्ति को स्वीकार किया तो

वहाँ कम हो जायेगा। इसलिए साधन मिलते हुए भी उसका त्याग करो। प्राप्ति होते हुए भी त्याग करना, उसको ही त्याग कहा जाता है।

27) जो माया के अनेक प्रकार के चक्करों में बार-बार आते हैं, उनके सिर पर अनेक प्रकार के विघ्नों का बोझ होता है। ऐसी आत्मा सदैव कर्जदार और मर्जदार होगी–उनके मस्तक पर, मुख पर, सदैव क्वेश्चन मार्क होंगे। हर बात में क्यों, क्या और कैसे, यह क्वेश्चन्स होंगे। जिन सम्बन्धों के सुखों का अनुभव नहीं किया है, उन सम्बन्धों में बुद्धि का लगाव जाता है और वह लगाव ही बुद्धि की लगन में विघ्न-रूप बन जाता है। इस विघ्न को समाप्त करने के लिए सारे दिन में भिन्न-भिन्न सम्बन्धों का अनुभव करो।

28) विनाश होना तो चाहिए लेकिन पता नहीं क्या होगा, शायद हो, दो चार मास में

तो कुछ दिखाई नहीं देता है, संगमयुग 50 वर्ष का है या 60 वर्ष का है–इसी प्रकार के संकल्प भी स्थापना के कार्य में विघ्न डालने वाले रॉयल रूप का संशय है। जब तक यह संशय है तब तक सम्पूर्ण विजयी नहीं बन सकते।

29) चाहे कोई हार्ड वर्कर है या प्लैनिंग बुद्धि है लेकिन यदि उन्हें साथ लेकर नहीं चलते तो सेवा में विघ्न पड़ते हैं। इसलिए लक्ष्य हो कि छोटों को भी आगे बढ़ाना है। नहीं तो एक उमंग-उत्साह से सर्विस करता है और दूसरे के वायब्रेशन, सफलता में विघ्न डालते हैं। इसलिए हर-एक को कोई-न-कोई ड्यूटी जरूर बाँटों। इससे सबके उत्साह का वायुमण्डल रहेगा।

30) सदा स्व परिवर्तन का लक्ष्य रखो। दूसरा बदले तो मैं बदलूँ – नहीं। दूसरा बदले या न

बदले मुझे बदलना है। 'हे अर्जुन' मुझे बनना है। यह जो चलते-चलते अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं या कोई व्यक्त भाव में आ जाते हैं तो उसका कारण वायुमण्डल में व्यक्त भाव है। अगर अव्यक्त वायुमण्डल हो तो कोई व्यक्त भाव की बातें लेकर भी आयेंगे तो बदल जायेंगे।

31) वर्तमान समय पुरूषार्थियों के मन में यह संकल्प उठना कि अन्त में विजयी बनेंगे व अन्त में निर्विघ्न और विघ्न-विनाशक बनेंगे–यह संकल्प ही रॉयल रूप का अलबेलापन है अर्थात् रॉयल माया है; जो सम्पूर्ण बनने में विघ्न डालता है।

विघ्न-विनाशक बनने की विधि

1) विघ्न-विनाशक बनने के लिए नॉलेजफुल बनो। नॉलेजफुल जानता है कि यह विघ्न क्यों आया! ये विघ्न गिराने के लिए नहीं है लेकिन और ही मज़बूत बनाने के लिए है। वह कन्फ्यूज नहीं होता है। कोई भी निमित्त पेपर बनकर आता है तो यह क्वेश्चन नहीं उठना चाहिए कि यह ऐसा क्यों करता है? ऐसा नहीं करना चाहिए। जो कुछ हुआ अच्छा हुआ, अच्छी बात उठा लो। अगर क्यों, क्या करते इम्तिहान की अन्तिम घड़ी हो गई तो फेल हो जायेंगे।

2) विघ्न-विनाशक बनने के लिए सर्व शक्ति सम्पन्न बनो। सर्वशक्तियां आपका जन्म-सिद्ध अधिकार हैं। सदा ये नशा रखो कि मैं मास्टर सर्वशक्तिमान् हूँ और सर्वशक्तियों को समय

प्रमाण कार्य में लगाओ।

3) अपने मस्तक पर सदा ही बाप की दुआओं का हाथ अनुभव करो। जिसके ऊपर परमात्म-दुआओं का हाथ हैं, वो सदा निश्चित विजयी हैं ही। उनके मस्तक पर विजय का अविनाशी तिलक लगा हुआ है। विजय के तिलकधारी अर्थात् विघ्न-विनाशक।

4) स्वयं में रहम की भावना इमर्ज करो, चाहे स्व प्रति, चाहे सर्व आत्माओं के प्रति यह लहर फैलाओ। रहम की भावना से विघ्न सहज खत्म हो जायेंगे। जहाँ रहम होगा, वहाँ तेरा-मेरा की हलचल नहीं होगी।

5) सहन-शक्ति और समाने की शक्ति धारण करो तो स्वभाव-संस्कार के कारण जो विघ्न पड़ते हैं वे संकल्प व कर्म में नहीं आयेंगे और ना ही दूसरों के स्वभाव - संस्कार से टक्कर

होगी।

6) विघ्न-विनाशक बनने के लिए निरन्तर योगी और निरन्तर सेवाधारी बनो। बाप की याद के बिना जीवन नहीं, ऐसे ही सेवा के बिना जीवन नहीं। बाप की याद और सेवा, जब यह डबल-लॉक लग जाता है तो विघ्न ठहर नहीं सकता है।

7) विघ्न-विनाशक बनने के लिए लगन की अग्नि तेज करो। यदि लगन में कमी है तो विघ्न अपना काम करेगा। लेकिन लगन की अग्नि तेज है तो विघ्न रूपी किचड़ा भस्म हो जायेगा। जहाँ लगन है वहाँ विघ्न नहीं रह सकता, कर्मयोग से कर्मभोग भी परिवर्तन हो जाता है।

8) सर्व विघ्नों से, सर्व प्रकार की परिस्थितियों से या तमोगुणी प्रकृति की आपदाओं से सेकण्ड

में विजयी बनने के लिए सिर्फ एक बात निश्चय और नशे में रहे - ''वाह रे मैं''! मैं कौन? मैं श्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूँ! दाता हूँ–यही भावना सदा निर्विघ्न, इच्छा मात्रम् अविद्या की स्थिति का अनुभव कराती है।

9) विघ्न-विनाशक बनने के लिए सदा एक लक्ष्य की तरफ़ ही नज़र रहे। एक लक्ष्य अर्थात् बिन्दी की तरफ़ सदा देखने वाले। अन्य कोई भी बातों को देखते हुए नहीं देखो। जैसे यादगार रूप में भी दिखाया है कि मछली के तरफ़ नज़र नहीं थी लेकिन ऑख की भी बिन्दू में थी। तो मछली है विस्तार और सार है बिन्दू। तो विस्तार को नहीं देखो लेकिन सार अर्थात् एक बिन्दू को देखो।

10) किसी भी प्रकार के विघ्न से मुक्त होने की युक्ति है – डबल लाइट स्वरूप की स्थिति। यह स्थिति ही सेकण्ड में हाई जम्प दिलाने

वाली है। लेकिन हाई जम्प के बजाए पत्थर को तोड़ने लगते हो या उन्हें हटाने लग जाते हो जिस कारण जो भी यथा शक्ति हिम्मत और हुल्लास है, वह उसी में ही खत्म हो जाता है और थक जाते हो व दिलशिकस्त हो जाते हो। सदा बाप और प्राप्ति को सामने रखने से सब विघ्न खत्म हो जायेंगे।

11) विघ्न-विनाशक बनने के लिए रूहानियत का पावरफुल वायुमण्डल बनाओ। ज्ञान-सूर्य समान बीज़रूप स्टेज में वा फरिश्ते स्वरूप में स्थित रहने का अभ्यास करो।

12) विशेष जब कोई विघ्न कहाँ आते हैं तो जैसे अन्तर्राष्ट्रीय योग रखते हो। वैसे हर मास संगठित रूप में चारों ओर विशेष टाइम पर एक साथ योग का प्रोग्राम रखो। पूरा ज़ोन का ज़ोन योगदान दो, इससे किला मजबूत होगा।

13) विघ्न-विनाशक बनने के लिए अपना

कम्बाइन्ड रूप स्मृति में रखो। हम अकेले नहीं हैं, जहाँ बच्चे हैं वहाँ बाप हर बच्चे के साथ है। सदैव बाप की याद के छत्रछाया के अन्दर रहो तो किसी भी प्रकार के माया के विघ्न छत्रछाया के अन्दर आ नहीं सकते। तो जहाँ भी रहते हो, जो भी कार्य करते हो – सदा ऐसे ही अनुभव करो कि हम सेफ्टी के स्थान पर हैं।

14) अमृतवेले जब चारों ओर तमोगुण का प्रभाव दबा हुआ होता है। वातावरण वृत्ति को बदलने वाला होता है। ऐसे समय पर विशेष रूप से ज्ञान-सूर्य की लाईट और माइट की किरणों का स्वयं पर अनुभव करो। बुद्धि-रूपी कलश में शक्तियों का अमृत धारण कर लो तो विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

15) कोई भी विघ्न आपके लिए पाठ हैं, आप उनके अनुभवी बनते-बनते पास विद्

आनर हो जायेंगे। कुछ भी होता है तो उससे पाठ ले लो, क्यों-क्या में नहीं जाओ।

16) विघ्न-विनाशक बनना अर्थात् सदा बाप-समान मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति में रहना। इस स्थिति में रहेंगे तो विघ्न वार कर ही नहीं सकते। अगर सदा मास्टर सर्वशक्तिमान् की स्थिति में नहीं रहते तो कभी विघ्न-वश, कभी विघ्न-विनाशक। जितना समय विघ्नों के वश हो उतना समय लाख गुणा घाटे में जाता है।

17) विघ्न-विनाशक बनने के लिए अनुभवों को बढ़ाते जाओ, हर गुण के अनुभवी-मूर्त बनो। जो बोलो, वह अनुभव हो। अनुभवी को कोई हिलाना भी चाहे तो हिला नहीं सकता। अनुभव के आगे माया की कोई भी कोशिश सफल नहीं होगी। अनुभवी कभी धोखा नहीं खाते। अनुभव का फाउन्डेशन मज़बूत करो।

18) कभी भी आपस में रीस नहीं लेकिन रेस करो। माया कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप अंगद के मुआफिक ज़रा भी नहीं हिलो, जरा भी कमज़ोरी के संस्कार अन्दर न हों। पुराने संस्कारों से मरजीवा बनो तो विघ्न ठहर नहीं सकते।

19) पढ़ाई से दिल की प्रीत हो, जिसका पढ़ाई से प्यार होता है वो स्वयं भी बिजी रहते हैं और औरों को भी बिज़ी रख सकते हैं। जो सदा बिज़ी रहते हैं वह स्वयं भी विघ्न-विनाशक और दूसरों को भी विघ्न-विनाशक बना सकते हैं, इसके लिए प्लानिंग बुद्धि बनो।

20) 'बाबा' शब्द ही जादू का शब्द है। तो जैसे जादू की रिंग या जादू की कोई भी चीज़ अपने साथ रखते हैं, वैसे 'बाबा' शब्द अपने साथ रखो तो कभी भी कोई विघ्न के वश

नहीं होंगे। अगर कोई बात हो भी जाए तो 'बाबा' शब्द याद करने और कराने से निर्विघ्न हो जायेंगे। बाबा-बाबा का महामन्त्र सदा स्मृति में रखो तो ऐसे अनुभव करेंगे जैसे छत्रछाया के नीचे चल रहे हैं।

21) मन्सा सेवा का अभ्यास बढ़ाओ, इससे वायुमण्डल पॉवरफुल बन जायेगा। पहले अपने स्थान का, शहर का, भारत का वायुमण्डल पावरफुल बनाओ फिर विश्व का। जो बच्चे मन्सा सेवा करना जानते हैं वो स्वयं भी निर्विघ्न रहते हैं, सेवाकेन्द्र भी निर्विघ्न रहता है। वहाँ किसी आत्मा के विघ्न रूप बनने की हिम्मत भी नहीं हो सकती है।

22) विघ्न आया उसको हटाया, यह भी टाइम वेस्ट हुआ। इसलिए किले को ऐसा मज़बूत बनाओ जो विघ्न अन्दर आ ही न सके। आपस में स्नेही, सहयोगी बनकर चलो।

23) कमज़ोरियों के संस्कार-रूपी बीज को याद के लगन की अग्नि में जला दो तो विघ्नों का वृक्ष पैदा नहीं होगा अर्थात् मन-वाणी और कर्म में कमज़ोरी नहीं आयेगी।

24) स्व के प्रति और सर्व के प्रति सदा विघ्न-विनाशक बनने का सहज साधन है – क्वेश्चन मार्क को सदा के लिए विदाई देना और फुलस्टॉप द्वारा सर्व शक्तियों का फुलस्टॉक करना।

25) सदा विघ्न-प्रूफ चमकीली फरिश्ता ड्रेस पहनकर रहो। मिट्टी की ड्रेस नहीं पहनो, साथ-साथ सर्व गुणों के गहनों से सजे रहो। विशेष 8 शक्तियों के शस्त्रों से सदा अष्ट-शक्ति शस्त्रधारी सम्पन्न मूर्ति बनकर रहो। सदा कमल-पुष्प के आसन पर अपने श्रेष्ठ जीवन के पांव रखो - तब कहेंगे विघ्न-विनाशक आत्मा।

26) माया शेर के रूप में भी विघ्न लेकर

सामने आये तो आप योग की अग्नि जलाकर रखो, अग्नि के सामने कोई भी भयानक शेर जैसी चीज़ भी वार नहीं कर सकती। सदा योगाग्नि जगती रहे तो माया किसी भी रूप में आ नहीं सकती है। सब विघ्न समाप्त हो जायेंगे।

27) कोई भी बात यदि दिल में आती है तो उसे सुनाने में कोई हर्जा नहीं है लेकिन स्थान पर सुनाओ, नहीं तो समा लो। स्थान पर यदि सुनाते हो तो बड़ों द्वारा जो डायरेक्शन मिलता है, उसमें चलने के लिए सदा तैयार रहो। सुनाया तो आपकी जिम्मेवारी खत्म हुई फिर बड़ों की जिम्मेवारी हो जाती है। इसलिए सुनाकर हल्के हो जाओ, नहीं तो अन्दर कोई भी बात होगी तो सेवा में व स्व की उन्नति में बार-बार विघ्न रूप बन जायेगी।

28) आपका यादगार विघ्न-विनाशक गणेश

के रूप में आज तक भी पूजा जाता है। तो विघ्न-विनाशक अर्थात् सारे विश्व के विघ्न-विनाशक। अपने ही विघ्न-विनाशक नहीं। अपने में ही लगे रहेंगे तो विश्व के विघ्न विनाश कब करेंगे? लेकिन कोई भी विघ्न विनाश करने के लिए शक्तियों की आवश्यकता है। अगर कोई एक भी शक्ति नहीं होगी तो विघ्न विनाश नहीं कर सकते। इसलिए सब शक्तियों से सम्पन्न बनो।

29) ''सी फादर'' करने से सदा निर्विघ्न रहेंगे। ''सी सिस्टर'', ''सी ब्रदर'' करने से कोई न कोई हलचल होती है। सदा ''सी फादर''। ब्रह्मा बाप ने क्या किया? सबके संस्कार बाप समान हों। यह संस्कार मिलाने की डांस सीख लो तो विघ्न खत्म हो जायेंगे। संस्कारों से टक्कर नहीं खाना है, संस्कार मिलाना है। यदि कोई दूसरा गड़बड़ भी करे

तो भी आप मिलाओ, आप गड़बड़ नहीं करो और ही उसको शान्ति का सहयोग दो।

30) विघ्न-विनाशक बनने की विधि है – किसी का भी सामना करने के बजाए शान्त रहना। शान्ति से हर कार्य को सम्पन्न करो। न स्वयं हलचल में आओ, न दूसरों को हलचल में लाओ। कई बच्चे सोचते हैं कि थोड़ा हलचल करते हैं तो यह अटेन्शन खिंचवाते हैं। लेकिन ऐसे नहीं करना है। यह अटेन्शन नहीं खिंचवाते लेकिन टेन्शन पैदा करते हो। इसलिए शान्ति की शक्ति को अपनाओ, इससे कितना भी बड़ा विघ्न सहज समाप्त हो जायेगा।

31) विघ्न प्रूफ बनना है तो सर्व की दुआयें लो। पहले हैं -- मात-पिता की दुआएं और साथ में सर्व के सम्बन्ध में आने से सर्व द्वारा दुआएं। सबसे बड़े से बड़ा तीव्र गति से आगे

उड़ने का तेज यन्त्र है–'दुआएं'। जिन्हें सर्व की दुआयें मिलती हैं उन्हें कोई भी विघ्न जरा भी स्पर्श नहीं कर सकता है। युद्ध नहीं करनी पड़ती है। हर कर्म, बोल और संकल्प में सहज ही योगयुक्त, युक्तियुक्त बन जाते हैं।

32) सदैव यह स्मृति में रहे कि हम सारे विश्व के विघ्न-विनाशक हैं, विश्व-परिवर्तक हैं। विश्व-परिवर्तक शक्तिशाली होते हैं, उनकी शक्ति के आगे कोई कितना भी शक्तिशाली हो लेकिन वह कमजोर बन जाता है। विघ्न को कमजोर बनाने वाले हो, स्वयं कमजोर बनने वाले नहीं। अगर स्वयं कमजोर बनते हो तो विघ्न शक्तिशाली बन जाता है और स्वयं शक्तिशाली हो तो विघ्न कमजोर बन जाता है। इसलिए सदा अपने मास्टर सर्वशक्तिमान् स्वरूप की स्मृति में रहो।

33) कभी भी किसी भी प्रकार का विघ्न आता है तो स्मृति रखो कि विघ्न का काम है आना और हमारा काम है विघ्न-विनाशक बनना। जब नाम है विघ्न-विनाशक, तो जब विघ्न आयेगा तब तो विनाश करेंगे ना। तो ऐसे कभी नहीं सोचना कि हमारे पास ही यह विघ्न क्यों आता है? विघ्न आना ही है और हमें विजयी बनना ही है।

34) बापदादा के दिलतख्त-नशीन बनो तो कोई भी विघ्न वा समस्या नहीं आ सकती है। न प्रकृति वार कर सकती है, न माया वार कर सकती है। दिल तख्त-नशीन बनना अर्थात् सहज प्रकृतिजीत, मायाजीत बनना।

35) पुरुषार्थ करते-करते जो माया के विघ्न आते हैं, उन पर विजय प्राप्त करने के लिए यही स्लोगन याद रखना कि बाप का खजाना

हमारा जन्म-सिद्ध अधिकार है। जब अपने को अधिकारी समझेंगे तो माया के अधीन नहीं होंगे। पहले संगमयुग के सुख के अधिकारी हैं और फिर भविष्य में स्वर्ग के सुखों के अधिकारी हैं। अपना अधिकार भूलो नहीं। जब अपना अधिकार भूल जाते हो तब कोई न कोई बात के अधीन होते हो और जो पर-अधीन होते हैं, वह कभी भी सुखी नहीं रह सकते हैं।

36) विघ्नों वा परीक्षाओं से पास होने के लिए परखने की शक्ति को बढ़ाओ। माया किस रूप में आ रही है और क्यों मेरे सामने यह विघ्न आया है? इसकी रिजल्ट क्या है? यह परख लो तो परीक्षाओं में फेल नहीं हो सकते।

37) विघ्नों को एक सेकेण्ड में खत्म करना

है तो सिर्फ दो अक्षर याद रखना कि जो कहते हैं, वो करना है। कहते हैं हम ब्रह्माकुमार, कुमारी हैं। हम बापदादा के बच्चे आज्ञाकारी हैं। मददगार हैं। जो भी बातें कहते हो वो प्रैक्टिकल करना तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे।

38) जितना योगबल और ज्ञानबल दोनों को समानता में लायेंगे उतनी सफलता होगी, साथ-साथ सर्विस में बिजी हो जायेंगे तो विघ्न आदि सब टल जायेंगे। दृढ़ निश्चय के आगे कोई रूकावट आ नहीं सकती।

39) ड्रामा में विघ्न तो आयेंगे ही लेकिन उन्हें खत्म करने की युक्ति है – सदैव समझो कि यह पेपर है। अपनी स्थिति की परख यह पेपर कराता है। कोई भी विघ्न आए तो उनको पेपर समझ पास करना है। बात को नहीं देखना है लेकिन पेपर समझना है। पेपर में भी

भिन्न-भिन्न क्वेश्चन होते हैं - कभी मन्सा का, कभी लोक-लाज का, कभी सम्बन्ध का, कभी देशवासियों का क्वेश्चन आयेगा। परन्तु इसमें घबराना नहीं है। गहराई में जाना है।

40) रहम की भावना से महादानी बनो तो विघ्न-विनाशक बन जायेंगे। सारे दिन में चेक करो कि कितने रहमदिल बने? कितनी आत्माओं पर रहम किया? दूसरों को सुख देने से स्वयं में सुख भरता है। देना अर्थात् लेना। इससे सुख स्वरूप बन जायेंगे, फिर कोई विघ्न नहीं आयेंगे क्योंकि दान करने से शक्ति मिलती है।

41) विघ्न-विनाशक बनने के लिए बाबा-बाबा की ढाल सदैव अपने साथ रखो। इस ढाल से सब विघ्न खत्म हो जायेंगे। मैं पन समाप्त हो जायेगा।

42) अपने काली स्वरूप में सदा स्थित रहो तो माया का कोई भी विघ्न सामने आने का साहस नहीं रख सकेगा। सर्व विघ्नों को हटाने के लिए सदैव दो बातें अपने सामने रखो:- एक तरफ विनाश के नगाड़े और दूसरे तरफ अपने राज्य के नजारे, दोनों ही साथ-साथ स्मृति में रहें तो किसी भी विघ्न को सहज ही पार कर लेंगे।

43) जो महारथी बच्चे मास्टर नॉलेजफुल अथवा मास्टर सर्वशक्तिमान् स्थिति में रहते हैं, वे नॉलेज के आधार पर हर विघ्न को हटाकर मगन अवस्था में रह सकते हैं। अगर विघ्न हटते नहीं हैं तो जरूर शक्ति प्राप्त करने में कमी है। नॉलेज ली है लेकिन उसको समाया नहीं है। नॉलेज को समाना अर्थात् स्वरूप बनना।

44) अपने पुराने संस्कार जो सर्व के सहयोगी बनने में विघ्न रूप बनते हैं, उन संस्कारों को मिटाओ तब विघ्न समाप्त होंगे। इसके लिए एक हम दूसरा बाप। तीसरी बातें देखने में आयेंगी लेकिन देखते हुए भी न देखो, अपने को और बाप को देखो तो सहज विघ्न खत्म हो जायेंगे।

45) अपने को कम्बाइन्ड समझो। बापदादा सेवेरुण्ड, सेवेरुण्ड का साथी है। जब से जन्म लिया है, तब से लेकर साथ है। उस साथी को सदा साथ रखो तो विघ्न ठहर नहीं सकते हैं। सदा का साथ ऐसा हो जो कोई भी कभी इस साथ को तोड़ न सके। फिर दोनों की लगन में माया विघ्न डाल नहीं सकती है।

46) किसी भी प्रकार के विघ्नों से सेफ रहने का सबसे अच्छा साधन है–अन्तर्मुखी अर्थात्

अन्डरग्राउन्ड हो जाओ। इससे, एक तो वायुमण्डल से बचाव हो जायेगा, दूसरा -- एकान्त प्राप्त होने के कारण मनन शक्ति भी बढ़ेगी, तीसरा -- कोई भी माया के विघ्नों से सेफ हो जायेंगे।

47) आत्मा रूपी नेत्र पावरफुल और क्लीयर हो जिससे आने वाले विघ्न की महसूसता पहले से ही हो जाए। जब इनएडवांस मालूम पड़ जायेगा तो पहले से ही होशियार होने के कारण, विघ्नों में सफलता पा लेंगे। कभी भी हार नहीं होगी।

48) कोई भी समस्या वा विघ्न अथवा सरकमस्टाँस पर विजयी बनने के लिए आपका हर संकल्प, हर कर्म -- युक्तियुक्त, राज़युक्त, रहस्ययुक्त हो। व्यर्थ न हो। अभी प्रैक्टिस करने वाले योगी नहीं लेकिन प्रैक्टिकल योगी

बनो तो सब विघ्न स्वत: समाप्त हो जायेंगे।

49) स्वयं को मास्टर विश्व-निर्माता समझकर चलो तो माया के छोटे-छोटे विघ्न बच्चों के खेल समान लगेंगे। जैसे छोटा बच्चा अगर बचपन के अनजानपन में नाक, कान भी पकड़ ले तो जोश नहीं आयेगा क्योंकि समझते हैं यह निर्दोष वा अनजान है। उनका कोई दोष दिखाई नहीं देगा। ऐसे ही माया भी अगर किसी आत्मा द्वारा समस्या, विघ्न वा परीक्षा पेपर बनकर आती है तो उन आत्माओं को निर्दोष समझना चाहिए। माया ही उस आत्मा द्वारा अपना खेल दिखा रही है। ऐसे निर्दोष भावना होगी तो उन पर तरस व रहम आयेगा। फिर पुरुषार्थ की स्पीड ढीली नहीं होगी। हर सेकेण्ड में चढ़ती कला का अनुभव करेंगे।

50) सदा स्वयं को मर्यादा की लकीर के अन्दर रखो तो यह रावण अर्थात् माया अथवा

विघ्न मर्यादा की लकीर के अन्दर आने की हिम्मत नहीं रख सकते। कोई भी विघ्न अथवा तूफान, परेशानी वा उदासी आती है तो समझना चाहिए कहाँ न कहाँ मर्यादाओं की लकीर से अपना बुद्धि रूपी पांव बाहर निकाला है।

51) ज्ञान का भोजन खाने के बाद पहले स्वयं में समाना सीखो, फिर बांटो। खाया और बांट दिया तो अपने में शक्ति नहीं रहती है। सिर्फ दान करने की खुशी रहती है लेकिन स्वयं में शक्ति नहीं रहती है और शक्ति न होने के कारण विघ्नों को पार कर निर्विघ्न नहीं बन सकते हैं। छोटे-छोटे विघ्न लगन को डिस्टर्ब कर देते हैं, इसलिए समाने की शक्ति धारण करो।

52) अगर सदा स्वदर्शन चक्र चलता रहेगा तो जो अनेक प्रकार के माया के विघ्नों के

चक्र में आ जाते हो वह नहीं आयेंगे। सभी चक्रों से स्वदर्शन चक्र द्वारा बच सकते हो। तो सदैव यह देखो कि स्वदर्शन-चक्र चल रहा है? कोई भी प्रकार का अलंकार नहीं है अर्थात् सर्वशक्तियां नहीं हैं तो सर्व विघ्नों से वा सर्व कमजोरियों से मुक्ति भी नहीं होती है। विघ्नों से मुक्ति चाहते हो तो शक्ति धारण करो अर्थात् अलंकारी रूप होकर रहो।

53) श्रीमत रूपी हाथ अपने ऊपर सदा अनुभव करो तो कोई भी मुश्किल परिस्थिति वा माया के विघ्न से घबरायेंगे नहीं। हाथ की मदद से, हिम्मत से सामना करना सहज अनुभव करेंगे। इसलिए चित्रों में वरदान का हाथ, भक्तों के मस्तक पर दिखाते हैं। इसका अर्थ भी यही है कि मस्तक अर्थात् बुद्धि में सदैव श्रीमत रूपी हाथ अगर है तो कोई भी विघ्न हार खिला नहीं सकते।

54) मन के विघ्नों से युद्ध करने में समय देना, यह अपने प्रति व्यर्थ समय देना हुआ। इसको आवश्यक नहीं, व्यर्थ कहेंगे। ब्रह्मा बाप ने अपना आवश्यक समय भी कल्याण प्रति दिया तो 'फालो फादर' करो अर्थात् अब अपने प्रति समय नहीं लगाओ। सदा चेक करो कि सदा ही अपना समय और संकल्प विश्व-कल्याण प्रति लगाते हैं! तब कहेंगे बाप समान विश्व कल्याणी वा विघ्न विनाशक।

55) जो सदैव मिलन में मगन रहते हैं, उनके सामने कोई भी विघ्न ठहर नहीं सकता है। मिलन विघ्न को हटा देता है, वह विघ्न-विनाशक होते हैं। यदि बार-बार कोई विघ्न आता है तो इससे सिद्ध है कि सदा मिलन मेला नहीं मनाते हो।

56) विघ्नों का निवारण करने के लिए निर्णय

शक्ति को बढ़ाओ, इसके लिए बापदादा के हर कर्तव्य वा चरित्रों की कसौटी को सामने रखो। जो भी कर्म वा संकल्प करते हो, अगर इस कसौटी पर देख लो कि यह यथार्थ है वा अयथार्थ है? व्यर्थ है वा समर्थ है? तो जो भी कर्म करेंगे वह सहज और श्रेष्ठ होगा। इस कसौटी को साथ नहीं रखते हो, इसलिए विघ्नों से मुक्ति नहीं मिलती है।

57) सदा अधिकारी बनकर चलो तो कोई भी विघ्न के अधीन हो नहीं सकते। इस प्रकृति के अधीन नहीं बनना है। जैसे बाप प्रकृति को अधीन कर आते हैं, अधीन नहीं होते। वैसे ही इस देह वा प्रकृति के अधीन होने से ही अनेक विघ्न आते हैं, इसलिए अधीन करके चलो न कि अधीन होकर।

58) कोई भी माया के सूक्ष्म वा स्थूल विघ्न

आते हैं वा माया का वार होता है तो एक सेकेण्ड में अपनी श्रेष्ठ शान में स्थित हो जाओ इससे माया दुश्मन पर ठीक निशाना लगा सकेंगे। कोई क्या भी करे, कोई आपके लिए विघ्न रूप बने, अपकार करे तो भी आपका भाव सदा शुभचिंतकपन का हो–तब कहेंगे, विघ्न विनाशक।

59) बाप का बनने के साथ-साथ जो व्रत धारण किये हैं, उन्हें सदा स्मृति में रखो। स्मृति से वृत्ति चंचल नहीं होगी। वृत्ति चंचल नहीं होगी तो प्रवृत्ति की परिस्थिति वा प्रकृति के कोई भी विघ्नों के वश नहीं होंगे। अगर कोई भी विघ्न आता है और उसके वशीभूत हो जाते हो तो गोया वियोगी बनते हो। विघ्न, योगयुक्त अवस्था को समाप्त कर देते हैं इसलिए वियोगी नहीं बनो। व्रत को सदा स्मृति में

लाओ।

60) योग की शक्ति द्वारा अपने पिछले संस्कारों का बीज खत्म कर दो तो कोई भी संस्कार अथवा नेचर विघ्न रूप नहीं बनेंगी। यदि कोई भी बात विघ्न रूप बनती है तो उस बात को परिवर्तन करने की युक्ति सीख लो। परिवर्तन कर देने से परिपक्वता आ जायेगी फिर कभी विघ्नों से हार नहीं खायेंगे।।

61) जो विघ्न आया है, वह समय प्रमाण जायेगा भी जरूर लेकिन समय से पहले आपने परिवर्तन की शक्ति से परिवर्तन कर लिया तो उसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी। इसलिए यह भी नहीं सोचना कि जो आया है वह आपेही चला जायेगा वा इस आत्मा का जितना हिसाब-किताब होगा वह पूरा हो ही जायेगा वा समय आपेही सभी को सिखला देगा।

नहीं, मैं करूंगा मैं पाऊंगा। इसलिए विघ्न-विनाशक बन लगन में मगन रहना। लगन से विघ्न भी अपना रूप बदल लेंगे। विघ्न, विघ्न नहीं अनुभव होंगे लेकिन विघ्न विचित्र अनुभवी-मूर्त बनाने के निमित्त बने हुए दिखाई देंगे। बड़ी बात, छोटी-सी अनुभव होगी।

62) अपने जीवन में आने वाले विघ्न वा परीक्षाओं को पास करना–वह तो बहुत कॉमन है, लेकिन जो विश्व-महाराजन् बनने वाले हैं उनके पास इतना स्टॉक भरपूर होगा जोकि विश्व के प्रति प्रयोग हो सके। ऐसी आत्मायें याद की वा लगन की अग्नि को ऐसा प्रज्जवलित करेंगी वा ऐसा अव्यक्त वातावरण बनायेंगी जो ब्राह्मण परिवार की सर्व आत्माओं के सब प्रकार के विघ्न सहज समाप्त हो जायें।

63) बापदादा के नयनों में ऐसे समाये हुए

रहो जो कोई भी परिस्थिति व प्रकृति अर्थात् पाँच तत्व विघ्न रूप न बन सकें। लगन को ऐसा अग्नि का रूप बनाओ जिस अग्नि में सर्व व्यर्थ संकल्प, सर्व कमजोरियाँ व सब रहे हुए पुराने संस्कार रूपी विघ्न सहज ही भस्म हो जाएं।

64) जैसी समस्या हो, जैसा समय हो, वैसे अपना शक्तिशाली रूप बना लो। अगर परिस्थिति सामना करने की है, तो सामना करने की शक्ति का स्वरूप हो जाओ। अगर परिस्थिति सहन करने की है, तो सहन शक्ति का स्वरूप हो जाओ–ऐसा अभ्यास करो, तब विघ्नों पर विजय हो सकेगी।

65) मैं पन और मेरे पन के कारण जो विघ्न पड़ते हैं, उन्हें समाप्त करने के लिए 'अनेक मेरे-मेरे' को 'एक मेरा बाबा' में बदल दो।

और जब 'मैं पन' आये तो यह एक शब्द याद रखो कि मैं निमित्त हूँ। निमित्त बनने से निराकारी, निरंहकारी और नम्रचित, नि:संकल्प अवस्था में रह सकेंगे।

66) कोई कितनी भी विकराल रूप की परिस्थिति हो या बड़े रूप की समस्या हो लेकिन आप अपनी ऊंची स्टेज पर स्थित रहो तो वह बिल्कुल छोटी लगेगी। बड़ी वा विकराल बात अनुभव नहीं होगी। जैसे ऊंची पहाड़ी पर खड़े होकर नीचे की कोई भी चीज़ देखो तो बड़ी चीज़ भी छोटी नज़र आती है, बड़े से बड़ा कारखाना भी एक मॉडल सा दिखाई पड़ता है। ऐसे ऊंची स्थिति में स्थित रहो तो सब विघ्न सहज पार कर लेंगे।

67) महावीर वह है जो विघ्नों में घबराने के बजाए, विघ्न विनाशक बनें। इसके लिए गाली

देने या दु:ख देने वाली आत्मा को भी अपने रहमदिल स्वरूप से, रहम की दृष्टि से देखो। ग्लानि की दृष्टि से नहीं। वह गाली दे, आप फूल चढ़ाओ, तब कहेंगे पुण्य आत्मा। ग्लानि वाले को दिल से गले लगाओ क्योंकि यह ग्लानि की दु:ख देने वाली बातें ही विघ्न रूप बनती हैं। तो मुझे दु:ख देना तो है ही नहीं, लेकिन लेना भी नहीं है।

68) अब हर एक को यही विशेष लक्ष्य रखना है कि ''कोई भी विघ्न में वा कोई भी कार्य में मेहनत न लेकर और ही अन्य आत्माओं को भी निर्विघ्न तथा हर कार्य में मददगार बनाते सहज ही सफलता-मूर्त बनेंगे और बनायेंगे।''

विघ्नों में अपनी स्थिति एकरस रखने के उपाय

1) जब कोई पेपर बनकर विघ्न डालते हैं तो ये नहीं सोचो कि मेरा ही पार्ट है क्या, सब विघ्नों के अनुभव मेरे पास ही आने हैं क्या! वेलकम करो, आओ। ये गिफ्ट है। ज्यादा एक्यूरेट मूर्ति बनना अर्थात् हेमर लगना। हेमर (हथौड़ी) से ही तो उसे ठोक-ठोक करके ठीक करते हैं। आप लोग तो अनुभवी हो गये हो, नथिंग न्यु। ये विघ्न भी खेल हैं।

2) विघ्नों का काम है आना और आपका काम है विजय प्राप्त करना। जब विघ्न अपना कार्य अच्छी तरह से कर रहे हैं तो आप मास्टर सर्वशक्तिमान् अपने विजय के कार्य में सदा सफल रहो। लक्ष्य रखो कि अब ऐसी कमाल करनी है जो हर स्थान विजयी अर्थात्

निर्विघ्न हो। विघ्न आयेंगे लेकिन हार नहीं होनी चाहिये। तो जहाँ विजय है, वहाँ विघ्न टिक नहीं सकता है।

3) सदा प्राप्तियों की स्मृति से, सन्तुष्ट आत्मा बनो तो कभी किसी भी विघ्न से तंग नहीं होंगे। सम्बन्ध में भी कोई खिटखिट नहीं होगी। अगर होगी भी तो उसका असर नहीं आयेगा। किसी भी प्रकार की उलझन या विघ्न एक खेल अनुभव होगा। समस्या भी मनोरंजन का साधन बन जायेगी क्योंकि नॉलेजफुल होकर देखेंगे।

4) माया के विघ्न तो ड्रामा में महावीर बनाने के लिए पेपर के रूप में आते हैं। बिना पेपर के कभी क्लास चेन्ज नहीं होता। पेपर आना अर्थात् क्लास आगे बढ़ना। तो पेपर आने से खुश होना चाहिए न कि हलचल में आना है।

5) हर आत्मा के अन्दर यही श्रेष्ठ शुद्ध संकल्प हो ''विजयी'', निर्विघ्न का अर्थ यह नहीं कि विघ्न आए ही नहीं – विघ्न तो हर कल्प आये हैं लेकिन विघ्नों में रूकने वाले नहीं। विघ्न-विनाशक बनने वाले हैं, यह स्मृति रहे। जो हर कल्प के अनुभवी हैं, उनको रिपीट करने में क्या मुश्किल! अनेक बार पार कर चुके हैं अब सिर्फ रिपीट कर रहे हैं।

6) कैसी भी परिस्थिति आ जाए, कितना भी बड़ा विघ्न आ जाए लेकिन खुशी नहीं जाए। विघ्न आया है तो चला जायेगा। लेकिन अपनी चीज़ क्यों चली जाए! वह आया, वह जाए। आने वाला जायेगा या रहने वाला भी चला जायेगा? तो खुशी अपनी चीज़ है। बाप का वर्सा है। इसलिए जब भी विघ्न आये तो यही सोचो कि यह आया है, जाने के लिए। कोई

घर का मेहमान आता है तो ऐसे नहीं, मेहमान होकर आया और सारी चीजें लेकर जाये। ध्यान रखेंगे ना। तो विघ्न आया और चला जायेगा लेकिन आपकी खुशी नहीं ले जाये।

7) सदा स्मृति स्वरूप रहो तो स्मृति के आधार पर समर्थ स्थिति बनने से परिस्थितियां एक खेल अनुभव होंगी, उसमें घबरायेंगे नहीं क्योंकि यह परिस्थितियां मंजिल पर पहुंचने के लिए रास्ते के साइड सीन्स हैं अर्थात् रास्ते के नजारे हैं। साइड सीन्स तो अच्छी लगती हैं ना! खर्चा करके भी साइड सीन देखने जाते हैं। अगर रास्ते में साइड सीन्स न हों तो बोर हो जायेंगे। ऐसे स्मृति स्वरूप, समर्थ-स्वरूप आत्मा के लिए परिस्थिति कहो, पेपर कहो, विघ्न कहो, प्रॉब्लम्स कहो, सब साइड सीन्स हैं। स्मृति में रहे कि यह मंजिल के साइड सीन्स अनगिनत बार पार की हैं। नथिंगन्यु!

8) परिस्थितियां तो बदलनी ही हैं, बदलती ही रहेंगी। लेकिन निश्चयबुद्धि बच्चे कभी परिस्थितियों के कारण बदल नहीं सकते, उनका तो गायन है बदल जाए दुनिया, न बदलेंगे हम.. क्योंकि निश्चय के जो भी आधार अब तक खड़े हैं, वह सब आधार निकलने ही हैं। लेकिन नींव मजबूत है तो विघ्न अथवा परिस्थितियां उन्हें जरा भी हिला नहीं सकती।

9) ऊंची मंजिल पर पहुंचने के लिए जो रास्ता तय कर रहे हो इसमें अनेक प्रकार के विघ्न तो आने ही हैं लेकिन उन विघ्नों को पार करने के लिये पहले चाहिए -- परखने की शक्ति। फिर चाहिए निर्णय करने की शक्ति। जब निर्णय कर लेंगे कि यह माया है वा अयथार्थ है। इसमें फायदा है वा नुकसान? अल्पकाल की प्राप्ति है वा सदाकाल की प्राप्ति है? जब

यथार्थ निर्णय कर लेंगे तो स्थिति एकरस रहेगी

10) जो शूरवीर बच्चे हैं वे अपना समय विघ्नों में नहीं, लेकिन सर्विस में लगाते हैं। अब पुरूषार्थ में बचपन न हो। कैसी भी परिस्थिति हो, कितना भी बड़ा विघ्न हो, वायुमण्डल वैसा भी हो लेकिन कमजोर नहीं बनो तब कहेंगे शूरवीर। 'शूरवीर' पर किसी भी विघ्न का असर पड़ नहीं सकता है।

11) ईश्वरीय स्नेह और सहयोग का यादगार बनाओ। जितना एक दो के स्नेही, सहयोगी बनेंगे उतना माया के विघ्न हटाने में सहयोग मिलता रहेगा। सहयोग देना अर्थात् सहयोग लेना। परिवार में आत्मिक स्नेह देना है और माया पर विजय पाने का सहयोग लेना है। यह लेन-देन का हिसाब ठीक हो तो विघ्नों में एकरस रह सकेंगे।

12) कोई भी विघ्न आवे लेकिन ज्यादा समय न चले। आया और गया – यह है शक्ति रूप की निशानी। मन्सा, वाचा, कर्मणा में आई हुई समस्याओं या विघ्नों के ऊपर विजयी बनने का लक्ष्य हो तो विजय माला में आ जायेंगे।

13) कोई भी प्लैन को प्रैक्टिकल में लाने तक अनेक प्रकार के विघ्न तो आयेंगे ही। लेकिन उसके लिए पहले से तैयारी चाहिए। जिस बात की आवश्यकता समझी जाती है, उसका प्रबन्ध भी पहले से किया जाता है। ऐसे विघ्नों को समाप्त करने के लिए पहले से ही प्रबन्ध करो। युक्तियां रचो ताकि समय व्यर्थ न जाये।

14) जब कोई भी ड्रिल शुरू करते हैं तो पहले-पहले थोड़ा दर्द महसूस होता है लेकिन

अभ्यास होने के बाद ड्रिल करने के सिवाए रह नहीं सकते। यहाँ भी जब बुद्धि की ड्रिल शुरू करते हो तो अभ्यास न होने के कारण मुश्किल लगता है अथवा माथा भारी होता है। कई प्रकार के विघ्न आते हैं, लेकिन अभ्यासी बनने से सब विघ्न स्वतः खत्म हो जायेंगे।

15) यदि कोई भी परिस्थिति व व्यक्ति विघ्न लाने के निमित्त बनते हैं तो उसके प्रति घृणा-दृष्टि, व्यर्थ संकल्पों की उत्पत्ति नहीं होनी चाहिए लेकिन उसके प्रति वाह-वाह निकले। अगर यह दृष्टि रखो तो आप सभी की श्रेष्ठ दृष्टि हो जायेगी। कोई कैसा भी हो, लेकिन अपनी दृष्टि और वृत्ति सदैव शुभचिन्तक की हो और कल्याण की भावना हो। हर बात में कल्याण दिखाई दे तो सामने वाला भी बदल जायेगा।

16) जब कोई भी विघ्न पड़ता है तो उसको समाप्त करने में जो समय खर्च करते हो या जो ज्ञान धन खर्च करते हो वह हुआ स्वयं के प्रति खर्च, अब उस खर्चे को बचाओ। इसके लिए रोज़ अमृतवेले बापदादा से अमरभव का वरदान लो तो सारा दिन कोई भी विघ्नों में मुरझायेंगे नहीं। सदा हर्षित वा एकरस रहने में वा सदा शक्तिशाली बनने में अमर रहेंगे।

17) बुद्धि में रहे कि अब स्वयं को विघ्न-प्रूफ रहना है। स्वयं में मन्सा का भी कोई विघ्न न हो। जैसे युद्ध के मैदान में यदि कोई महारथी अपने रथ अर्थात् सवारी के वश हो जाए तो वह विजयी नहीं बन सकता है, ऐसे कभी भी देह-अभिमान के वश हो, विघ्न रूप नहीं बनना है।

18) विघ्न आया और एक सेकेण्ड में चला गया, यह भी महारथियों की स्टेज नहीं है।

महारथी तो विघ्न को आने ही नहीं देंगे अर्थात् एक सेकेण्ड भी उसमें वेस्ट नहीं करेंगे। कोई भी समस्या या आने वाले परीक्षा को आने से पहले ही कैच कर, स्वयं को सेफ कर लेंगे। जैसे आजकल साइंस इतनी रिफाइन होती जा रही है जो सब बातों का पता पहले से ही पड़ जाता है और आने वेा पहले ही सेफ्टी वेा साधन अपना लेते हैं। ऐसे रिफाइन स्टेज का पुरुषार्थ तब कहा जायेगा, जब विघ्न को आने ही न दो अर्थात् एक सेकण्ड भी उसमें व्यर्थ न जाये। इसके लिए योगयुक्त और युक्ति-युक्त बनो।

19) विघ्न आता है, तो विशेष योग लगाते हो, इससे सिद्ध होता है कि दुश्मन ही शस्त्र की स्मृति दिलाते हैं। लेकिन दुश्मन आवे ही नहीं, समस्या सामना ही न कर सवेा उसवेा

लिए स्वत: और सदा स्मृति-स्वरूप बनो। सूली से कांटा बनना – यह फाइनल स्टेज नहीं है। कांटे को दूर से ही योगाग्नि में समाप्त कर देना – यह है फाइनल स्टेज।

20) विघ्नों को देख अपनी स्टेज से नीचे नहीं आओ, कोई भी तूफान, बुद्धि में तूफान पैदा न करे क्योंकि तूफान, तूफान नहीं, तोहफा है। जो तूफान को तूफान समझते हैं वो हलचल में आते हैं और जो तोहफा समझते हैं, वह हुल्लास में रहते हैं। चढ़ती कला की अनुभूति करते हैं। उनकी हिम्मत कम नहीं हो सकती है।

21) अगर कोई भी बात को देखते या सुनते हुए आश्चर्य अनुभव होता है तो यह भी फाइनल स्टेज नहीं है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए....अगर ऐसा संकल्प ड्रामा के होने पर भी उत्पन्न होता

है तो इसको भी अंश-मात्र की हलचल का रूप कहेंगे। क्यों-क्या का क्वेश्चन उठना माना हलचल। विघ्न विनाशक आत्मायें हलचल में भी नहीं आ सकती।

22) जैसे प्रकृति समाप्ति की तरफ अति में जा रही है वैसे ही सम्पन्न बनने वाली आत्माओं के सामने अब परीक्षायें व विघ्न भी अति के रूप में आयेंगे। लेकिन नथिंगन्यु की स्मृति से सदा हर्षित रहने वाले ही पास हो सकेंगे। इसलिये आश्चर्य नहीं खाना है कि पहले यह नहीं था अब क्यों है? यह आश्चर्य भी नहीं। फाइनल पेपर में आश्चर्यजनक बातें क्वेश्चन के रूप में आयेंगी तब तो पास और फेल हो सकेंगे। लेकिन बुद्धि में रहे कि यह विघ्न आना आवश्यक है, नथिंगन्यु, तब सदा हर्षित रहेंगे।

23) मास्टर आलमाइटी अथॉरिटी हूँ – सदा इसी पोजीशन में स्थित रहकर हर कर्म करो तो यह पोजीशन माया के हर विघ्न से परे, निर्विघ्न बनाने वाली है। जैसे कोई लौकिक रीति में भी जब कोई अथॉरिटी वाला होता है, तो उनके आगे कोई भी सामना करने की हिम्मत नहीं रखते हैं।

24) विघ्नों का आना यह भी ड्रामा में आदि से अन्त तक नूंध है। यह विघ्न भी असम्भव से सम्भव की अनुभूति कराते हैं और आप सभी तो अनुभवी हो ही गये हो इसलिए विघ्न भी खेल लगता है। जैसे फुटबाल का खेल करते हो तो बॉल आता है और ठोकर लगाते हो। यह भी फुटबाल का खेल है। खेल खेलने में तो मजा आता है ना। कोशिश करते हो कि बॉल मेरे पांव में आये तो मैं लगाऊं। तो यह

खेल होता रहेगा, नथिंगन्यु। ड्रामा खेल भी दिखाता है और सम्पन्न सफलता भी दिखाता है–यही ब्राह्मण कुल की रीति रस्म है।

विघ्न विनाशक बनो

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय,
पाण्डव भवन, आबू पर्वत